

**भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा "सतत कृषि विकास के लिए कृषि-प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग विषय पर कार्यशाला का आयोजन**

**नई दिल्ली, 17 मार्च 2026:** भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा उन्नत भारत अभियान के अंतर्गत 17 मार्च 2026 को "सतत कृषि विकास के लिए कृषि-प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग: सामाजिक लिंग दृष्टिकोण" विषय पर कार्यशाला-सह-क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों तथा महिला किसानों की सहभागिता रही, जिसमें सतत कृषि विकास को बढ़ावा देने में उभरती कृषि-प्रौद्योगिकियों की भूमिका तथा कृषि क्षेत्र में लिंग समावेशन और ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने पर विचार-विमर्श किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. आर. एन. पडारिया, संयुक्त निदेशक (प्रसार), भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, ने कृषि क्षेत्र में महिलाओं की महत्वपूर्ण और अपरिहार्य भूमिका की सराहना की। उन्होंने महिला किसानों के समर्पण और विभिन्न कृषि कार्यों में उनके महत्वपूर्ण योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि महिलाएँ खेती के लगभग प्रत्येक चरण में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, चाहे वह खेत में कार्य करना हो, फसल प्रबंधन हो या कटाई के बाद की गतिविधियाँ। उन्होंने बताया कि भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान सदैव महिला किसानों की भूमिका को मान्यता देता रहा है तथा प्रशिक्षण, तकनीकी हस्तक्षेपों और प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें निरंतर सहयोग प्रदान करता आया है और भविष्य में भी यह सहयोग जारी रहेगा।

डॉ. पडारिया ने यह भी उल्लेख किया कि महिला किसान लगातार कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं, किंतु वर्तमान समय में आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। उन्होंने कहा कि बेहतर उत्पादन और अधिक उपज प्राप्त करने के लिए कृषि-प्रौद्योगिकी का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस अवसर पर डॉ. मीनाक्षी चौधरी, वरिष्ठ परियोजना वैज्ञानिक, उन्नत भारत अभियान, राष्ट्रीय समन्वय संस्थान, आईआईटी दिल्ली ने इस प्रकार के महत्वपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन के लिए भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे मंच वैज्ञानिक अनुसंधान और ग्रामीण समुदायों, विशेषकर महिला किसानों, के बीच की दूरी को कम करने में सहायक सिद्ध होते हैं। डॉ. चौधरी ने उन्नत भारत अभियान के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए बताया कि इस पहल का लक्ष्य शैक्षणिक संस्थानों और गांवों के बीच सक्रिय सहभागिता के माध्यम से ग्रामीण विकास को सुदृढ़ करना है। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने, कृषि उत्पादकता बढ़ाने तथा प्रौद्योगिकी आधारित समाधानों के माध्यम से ग्रामीण आय में वृद्धि करने पर केंद्रित है।

डॉ. पी. एस. ब्रह्मानंद, परियोजना निदेशक, वाटर टेक्नोलॉजी सेंटर, भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, ने "कृषि में सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियाँ विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने जल के कुशल प्रबंधन तथा सटीक सिंचाई तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इन तकनीकों के माध्यम से जल उपयोग दक्षता को बढ़ाया जा सकता है और सतत कृषि उत्पादन सुनिश्चित किया जा सकता है।

एक अन्य तकनीकी व्याख्यान डॉ. रबी एन. साहू, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि भौतिकी प्रभाग, भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा "कृषि में ड्रोन और सेंसर का उपयोग विषय पर प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया कि ड्रोन और सेंसर जैसी उन्नत तकनीकों के उपयोग से फसल निगरानी, सटीक खेती और कृषि प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

कार्यशाला के अंतर्गत विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिनमें सतत कृषि विकास के लिए नवीन कृषि प्रौद्योगिकियों और आधुनिक तकनीकों पर विस्तृत जानकारी दी गई। इन सत्रों में कृषि में ऊर्ध्वाधर खेती, एग्रो-फोटोवोल्टिक प्रणाली तथा जलवायु-सहिष्णु कृषि के लिए प्रौद्योगिकियों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त कृषि में पूसा सन फ्रिज तकनीक, तथा प्रभावी कृषि परामर्श प्रणाली के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारत विस्तार (Bharat VISTAAR) की भूमिका पर भी विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम के दौरान उच्च कृषि उत्पादकता के लिए उन्नत कृषि यंत्रों, महिला किसानों के लिए विशेष रूप से विकसित उन्नत कृषि मशीनों और सुरक्षा उपकरणों, पूसा एसटीएफआर मीटर तथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड के उपयोग द्वारा बेहतर पोषक तत्व प्रबंधन पर भी जानकारी दी गई। इसके साथ ही रोग निदान किट, एकीकृत कीट प्रबंधन, कृषि में रोबोटिक्स तथा मूल्य संवर्धन प्रौद्योगिकियों जैसे विषयों पर भी विस्तार से चर्चा की गई, जिनका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना तथा कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करना है।

यह कार्यशाला आधुनिक कृषि नवाचारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और महिला किसानों की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हुआ। इस कार्यक्रम के माध्यम से महिला किसानों को आधुनिक कृषि-प्रौद्योगिकियों की जानकारी दी गई, जिससे उन्हें उन्नत कृषि पद्धतियों को अपनाने, उत्पादकता बढ़ाने तथा जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना करने में सहायता मिलेगी।

## Press Release

### IARI Organizes Workshop on Application of Agri-Tech for Sustainable Agricultural Development

**New Delhi, 17 March 2026:** ICAR-Indian Agricultural Research Institute, New Delhi organized a Workshop-cum-Capacity Building Programme on “*Application of Agri-Tech for Sustainable Agricultural Development: A Gender Perspective*” on 17 March 2026 under the Unnat Bharat Abhiyan (UBA) project. The programme brought together scientists, experts, and women farmers to deliberate on the transformative role of emerging agricultural technologies in promoting sustainable agricultural development while strengthening gender inclusivity and rural livelihoods.

Addressing the participants, Dr. R. N. Padaria, Joint Director (Extension), ICAR-IARI, New Delhi, appreciated the significant and indispensable role played by women in agriculture. He commended women farmers for their dedication and contribution across various agricultural activities, noting that women actively perform almost every role in farming—from field operations to crop management and post-harvest activities. He highlighted that ICAR-IARI has always recognized and supported the role of women farmers through training, technological interventions, and outreach programmes, and assured that the institute will continue to extend such support in the future.

Dr. Padaria further emphasized that while women farmers have been continuously learning and contributing to agriculture, the present era demands greater integration of modern technologies. He stressed that agri-tech solutions are crucial for achieving higher productivity and better crop outcomes.

Dr. Meenakshi Choudhary, Senior Project Scientist, Unnat Bharat Abhiyan, National Coordinating Institute, IIT Delhi, appreciated the efforts of ICAR-IARI for organizing such an important programme that connects scientific advancements with rural communities, particularly women farmers. She emphasized that creating such platforms helps bridge the gap between agricultural research and grassroots-level adoption of technologies. Dr. Choudhary also provided an overview of the objectives of the Unnat Bharat Abhiyan, highlighting that the initiative aims to strengthen rural development through active engagement of academic institutions with villages. She explained that the programme focuses on improving rural livelihoods, enhancing agricultural productivity, and increasing income opportunities by promoting sustainable and technology-based solutions in rural areas.

Dr. P. S. Brahmanand, Project Director, Water Technology Centre, ICAR-IARI, New Delhi delivered a lecture on Micro-Irrigation Systems in Agriculture, emphasizing the importance of efficient water management and precision irrigation technologies for enhancing water use efficiency and ensuring sustainable crop production.

Another technical lecture was delivered by Dr. Rabi N. Sahoo, Principal Scientist, Division of Agricultural Physics, ICAR-IARI, New Delhi on the Application of Drones and Sensors in Agriculture.

The workshop featured a series of technical sessions conducted by experts, highlighting innovative technologies and approaches for sustainable agricultural development. These sessions covered important themes including, vertical farming, agro-photovoltaic systems, and technologies for climate-resilient agriculture. Experts also shared insights on the Pusa Sun Fridge technology, and the role of artificial intelligence and Bharat VISTAAR for effective agro-advisory services. In addition, the programme included discussions on improved agricultural machinery for higher farm productivity, improved agricultural machines and safety devices designed specifically for women farmers, and the use of the Pusa STFR meter along with soil health card initiatives for better nutrient management. Sessions also highlighted diagnostic kits and integrated pest management approaches, robotics in agriculture, and value addition technologies aimed at improving farm profitability and reducing post-harvest losses.

The workshop served as a meaningful platform to create awareness about modern agricultural innovations and to enhance the capacity of women farmers for adopting technology-driven farming practices. The exposure to innovative agri-tech solutions is expected to help women farmers adopt improved farming practices, enhance productivity, and strengthen climate resilience in agriculture.

## *Glimpses of the Workshop-cum-Capacity Building Programme*

